

शकरकन्दी और घास से भी मिल सकता है एथेनॉल



एनएसआई के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाणपत्र दिए गए।

प्रशिक्षण

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'बेसिक माइक्रोबायोलॉजिकल तकनीक' विषय पर चल रहे दो दिवसीय प्रशिक्षण के अन्तिम दिन वैज्ञानिकों ने गन्ने के अतिरिक्त शकरकन्दी और घास आदि से भी एथेनॉल तैयार करने पर जोर दिया।

डॉ. सीमा परोहा, आचार्य जैव रसायन ने अल्टरनेट फीड स्टॉक्स फार इथेनॉल प्रोडक्शन पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने अल्कोहल उत्पादन के लिए कसावा, स्वीट सोरगम, स्वीट पोटेटो आदि विभिन्न अभोज्य फीड स्टॉक के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा कि ब्लेंडिंग के लिये इथेनॉल की जरूरत को केवल मोलासेस (शीर) के उपयोग से पूरा नहीं किया जा सकता है। हमारे देश में विगत कई वर्षों से 1100 मिलियन टन प्रतिवर्ष शीरा (मोलासेस) की उपलब्ध है। पांच प्रतिशत ब्लेंडिंग के लिये भी वैकल्पिक फीड स्टॉक की

आवश्यकता है।

उन्होंने सबसे सस्ते कार्बोहाइड्रेट्स जैसे कि लिग्नोसेलुलॉसिक्स (जैसे कि बगास, गेहूं, धान का डंठल और घास) के उपयोग की दिशा में अनुसंधान कार्य बढ़ाने की दिशा में जोर दिया। सत्र का दूसरा व्याख्यान डॉ. ब्रजेश सिंह, विभागाध्यक्ष (जैव रसायन अभियांत्रिकी), एचबीटीआई ने सूक्ष्मजीवों के संसार, आइसोलेशन की विभिन्न तकनीकों, सूक्ष्मजीवाणुओं के प्यूरिफिकेशन एवं कैरेक्टराइजेशन पर विस्तार से चर्चा की।

इसके अतिरिक्त उन्होंने सूक्ष्मजीवाणुओं के इतिहास, सूक्ष्मजीव विज्ञान के विकास में वैज्ञानिकों के योगदान एवं टीकाकरण के सिद्धांत आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला।

अंतिम सत्र में डॉ. रोशनी चौबे ने स्ट्रेलाइजेशन की माइक्रोबायल तकनीक, सूक्ष्मजीवाणुओं के आइसोलेशन एवं प्योरिफिकेशन का प्रायोगिक प्रदर्शन किया। एनएसआई निदेशक नरेन्द्र मोहन ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये। इस दौरान कई शिक्षक मौजूद थे।

Need to develop new techniques for ethanol production: Sugar scientists

HT Correspondent

htcity.kanpur@hindustantimes.com

KANPUR: Scientists at the National Sugar Institute (NSI) stressed upon the need of developing new techniques to raise ethanol production to meet its growing demand in sugar and petroleum industry, here on Monday.

Speaking on the concluding day of the two-day training programme on basic microbiological techniques, director of the NSI Dr Narendra Mohan said the domestic production of ethanol was of 2.7 to 2.9 bil-



■ NSI director Narendra Mohan.

lion litres per annum -3% of world production and less than half of China.

He expressed concern over the critical phase through

which the sugar industry has been undergoing due to inappropriate price structure of cane and sugar.

He suggested that sugar industries now work on bio-products to stabilise the industry. "It is encouraging that the government has raised the price of ethanol, a bio-product of the sugar industry, from Rs 48 to Rs 49 per litre," said Mohan.

He also suggested that ethanol's production be increased by developing new technologies, using alternate feedstock and increasing fermentation value of molasses.

Dr Seema Paroha, a scientist, said researches should be carried out using lignocellulosic materials like bagasse, wheat, rice straw and grass for ethanol production. "These materials have great potential for production of ethanol," she added.

Besides, she said, non-feed stocks like cassava, sweet sorghum and sweet potato could also be good sources of ethanol production. "Production only through molasses cannot help meet the demand of ethanol, needed for blending in petrol," added Paroha.

आज 30 दिसम्बर 2014

नान फूड के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दें



प्रमाण पत्र दिखाते प्रशिक्षार्थी साथ में निदेशक नरेन्द्र मोहन।

कानपुर, 29 दिसम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के सेमिनार हाल में आयोजित बेसिक माइक्रोबायोलॉजिकल तकनीक विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर डा. सीमा परोहा ने अल्कोहल उत्पादन के लिए कसावा, स्वीट सोरगम, स्वीट पोटैटो आदि विभिन्न अभोज्य (नान

छाया : आज

तकनीक, सूक्ष्मजीवाणुओं के प्युरिफिकेशन एवं फेरमेंटेशन पर विस्तार से चर्चा की। अंतिम सत्र में डा. रोशनी चौबे ने स्टैरलाइजेशन की माइक्रोबायल तकनीक, सूक्ष्मजीवाणुओं के आइसोलेशन एवं प्युरिफिकेशन का प्रायोगिक प्रदर्शन किया।

फूड) फीड स्टॉक के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि ब्लेंडिंग के लिए एथेनॉल की जरूरत को केवल मोलासेस (शीरे) के उपयोग से पूरा नहीं किया जा सकता है। देश में विलगत कई वर्षों से ११ मिलियन टन प्रतिवर्ष शीरा (मोलासेस) की उपलब्ध है। समारोह में संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये। इस

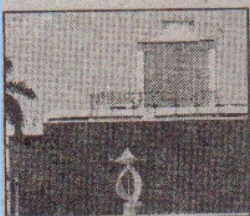
● प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये

परिप्रेक्ष्य में ५ प्रतिशत ब्लेंडिंग के लिए भी

वैकल्पिक फीड स्टॉक की आवश्यकता है। सबसे सस्ते कार्बोहाइड्रेट्स जैसे लिग्नोसेलुलॉसिक्स (जैसे कि बग़ास, गेहूँ, धान की डंठल और घास) के उपयोग की दिशा में अनुसंधान कार्य बढ़ाने की दिशा में जोर दिया। दूसरे सत्र में डा. वृजेश सिंह ने सूक्ष्मजीवों के संसार, आइसोलेशन की विभिन्न तकनीक, सूक्ष्मजीवाणुओं के प्युरिफिकेशन एवं फेरमेंटेशन पर विस्तार से चर्चा की। अंतिम सत्र में डा. रोशनी चौबे ने स्टैरलाइजेशन की माइक्रोबायल तकनीक, सूक्ष्मजीवाणुओं के आइसोलेशन एवं प्युरिफिकेशन का प्रायोगिक प्रदर्शन किया।

राष्ट्रीय सहारा 30 दिसम्बर 2014

कसावा, स्वीट सोरगम, स्वीट पोटैटो से अल्कोहल उत्पादन पर जोर



कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चल रहे कार्यशाला के दूसरे व अंतिम दिन अल्कोहल उत्पादन हेतु कसावा, स्वीट सोरगम, स्वीट पोटैटो के साथ ही विभिन्न अभोज्य खाद्य पदार्थों के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया गया। वैज्ञानिकों ने कहा कि ब्लेंडिंग के लिए

इथेनॉल की जरूरत को केवल शीरे के उपयोग से पूरा नहीं किया जा सकता।

सेमिनार में सोमवार को संस्थान के आचार्य, जैव रसायन डा.सीमा परोहा ने वैकल्पिक फीड स्टॉक के लिए बग़ास, गेहूँ, धान का डंठल व घास जैसे सस्ते

■ राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में कार्यशाला सम्पन्न

कार्बोहाइड्रेट्स के उपयोग की दिशा में अनुसंधान कार्य बढ़ाने पर जोर दिया। एचबीटीआई के जैव रसायन अभियांत्रिकी विभागाध्यक्ष डा.ब्रजेश सिंह ने सूक्ष्म जीवाणुओं के इतिहास,

वैज्ञानिकों के योगदान व टीकाकरण के सिद्धांत आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। डा.रोशनी चौबे ने स्टैरलाइजेशन की माइक्रोबायल तकनीक, सूक्ष्म जीवाणुओं के आइसोलेशन एवं प्युरिफिकेशन का प्रायोगिक प्रदर्शन किया। संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये।